(१३) स्कन्दपुराण

इस पुराण में स्वामी कार्तिकेय ने शैव तत्त्वों का निरूपण किया है, इसीलिए इसका नाम स्कन्दपुराण है। सबसे बृहत्काय पुराण यही है। इसकी मोटाई का इसी से अनुमान किया जा सकता है कि यह भागवत पुराण से पाँचगुना

Scanned with CamScanner

मोटा है। इसकी श्लोक संख्या ८१,००० है जो लक्ष श्लोकात्मक महाभारत से केवल एक पंचमांश ही कम है। इस पुराण के अन्तर्गत अनेक संहिताएँ, खण्ड तथा माहात्म्य हैं। इसी पुराण के अन्तर्गत सूतसंहिता (अ० श्लो० २०-१२) के अनुसार इस पुराण में छः संहिताएँ हैं जो अपने ग्रन्थ-परिमाण के साथ इस प्रकार हैं :—

संहिता	श्लोक संख्या
(१) सनत्कुमार संहिता	३६,०००
(२) सूत संहिता	६,०००
(३) शंकर संहिता	३०,०००
(४) वैष्णव संहिता	५,०००
(५) ब्राह्म संहिता	३,०००
(६) सौर संहिता	१,०००
	८१,००० श्लोक

इन संहिताओं के विषय में विस्तृत निर्देश नारदपुराण में दिया गया है। स्कन्दपुराण के विभाजन का एक दूसरा भी प्रकार खण्डों में हैं। ये खण्ड संख्या में सात हैं :—(१) माहेश्वर खंड, (२) वैष्णव खंड, (३) ब्रह्म खंड (४) काशी खण्ड, (५) रेवा खण्ड, (६) तापी खण्ड, (७) प्रभास खण्ड।

संहिताओं में सूत संहिता शिवोपासना के विषय में एक अनुपम खण्ड है। यह संहिता वैदिक तथा तान्त्रिक उभय प्रकार की पूजाओं का विस्तार के साथ वर्णन करती है। इस संहिता की इसी विलक्षणता के कारण विजयनगर साम्राज्य के मन्त्री माधवाचार्य[1] की दृष्टि इसपर पड़ी और उन्होंने 'तात्पर्य दीपिका' नामक बड़ी ही प्रामाणिक तथा विस्तृत व्याख्या लिखी है जो आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली पूना (नं० २५) से प्रकाशित हुई है। इस संहिता में चार खण्ड हैं:—(१) पहला खण्ड जिसका नाम 'शिव माहात्म्य' है १३ अध्याओं में शिव-महिमा का विशेष रूप से प्रतिपादन करता है। (२) ज्ञानयोग खण्ड—यह २० अध्यायों में आचार-धर्मों का वर्णन करने के अनन्तर हठयोग की प्रक्रिया का साङ्गोपाङ्ग विवेचन प्रस्तुत करता है। (३) मुक्तिखण्ड—यह ९ अध्यायों में मुक्ति के उपाय का वर्णन करता है। (४) यज्ञ वैभव खण्ड—यह सब खण्डों में बड़ा है। इसके दो भाग हैं—(१) पूर्व

१. माधवाचार्य की जीवनी के लिए देखिए—
बलदेव उपाध्याय : 'आचार्य सायण और माधव'।
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।

भाग और (२) उत्तर भाग। पूर्व भाग में ४७ अध्याय हैं जिनमें अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों का शैव भक्ति के साथ सम्पुटित कर बड़ा ही सुन्दर आध्यात्मिक विवेचन किया गया है। दार्शनिक दृष्टि से यह खण्ड बड़ा ही उपादेय, प्रमेयबहुल तथा मीमांसा करने योग्य है इसके उत्तर भाग में दो गीताएँ सम्मिलित हैं—(१) ब्रह्मगीता और (२) सूतगीता। पहली गीता १२ अध्यायों में विभक्त है और दूसरी ८ अध्यायों में। इनका भी विषय अध्यात्म ही है। आत्मस्वरूप का कथन तथा उसके साक्षात्कार के उपाय बड़ी ही सुन्दरता के साथ प्रतिपादित किये गये हैं। इस संहिता में शिव के प्रसाद से ही सब कर्मों की सिद्धि का वर्णन किया गया है। इस विषय के दो श्लोक नीचे दिये जाते हैं :—

प्रसाद-लाभाय हि धर्मसंचयः
प्रसाद-लाभाय हि देवतार्चनम्।
प्रसाद-लाभाय हि देवतास्मृतिः,
प्रसाद-लाभाय हि सर्वमीरितम्॥
शिवप्रसादेन विना न भुक्तयः,
शिवप्रसादेन बिना न मुक्तयः।
शिवप्रसादेन विना न देवताः,
शिवप्रसादेन हि सर्वमास्तिकाः॥

शंकर[1] संहिता—यह अनेक खण्डों में विभक्त है। इसका प्रथम खण्ड शिवरहस्य कहलाता है जो पूरी संहिता का आधा भाग है जिसमें १३,००० श्लोक हैं तथा ७ काण्ड हैं, जिनके नाम ये हैं:—(१) सम्भव काण्ड, (२) आसुर काण्ड, (३) माहेन्द्र कांड, (४) युद्ध कांड, (५) देव काण्ड, (६) दक्ष काण्ड, (७) उपदेश काण्ड। छठी संहिता **सौर संहिता** है जिसमें शिवपूजा सम्बन्धी अनेक बातों का वर्णन किया गया है। पहली संहिता—

सनत्कुमार संहिता—बीस-बाइस अध्यायों की एक छोटी सी संहिता है। इन संहिताओं को छोड़कर अन्य संहिताएँ उपलब्ध नहीं होतीं।

अब खण्डों के क्रम से इस पुराण का वर्णन किया जाता है :—

(१) माहेश्वर खंड—इसके भीतर दो छोटे खंड हैं—(क) केदार खण्ड, (ख) कुमारिका खण्ड। इन दोनों खंडों में शिव-पार्वती की नाना प्रकार की विचित्र लीलाओं का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है।

---

१. इन दोनों संहिताओं की विस्तृत विषयानुक्रमणी के निमित्त देखिए अष्टादशपुराणदर्पण पृ० ३२१–३२७।

Scanned with CamScanner

(२) **वैष्णव खंड**—इस खण्ड के अन्तर्गत उत्कल खंड है जिसमें उड़ीसा के जगन्नाथजी के मन्दिर, पूजाविधान, प्रतिष्ठा तथा तत्सम्बद्ध अनेक उपाख्यानों का वर्णन मिलता है। राजा इन्द्रद्युम्न ने नारदजी के उपदेश से किस प्रकार जगन्नाथजी के स्थान का पता लगाया, इसका विस्तृत वर्णन इस खण्ड में पाया जाता है। इस प्रकार जगन्नाथपुरी का प्राचीन इतिहास जानने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है।

(३) **ब्रह्म खंड**—इसमें दो खण्ड हैं (१) ब्रह्मारण्य खण्ड, (२) ब्रह्मोत्तर खण्ड। प्रथम खण्ड में तो धर्मारण्य नामक स्थान के माहात्म्य का विशद प्रतिपादन है। दूसरे खण्ड में उज्जैनी में स्थित महाकाल की प्रतिष्ठा तथा पूजन का विशेष विधान है।

(४) **काशी खण्ड**—इसमें काशी की महिमा का वर्णन है। काशी के समस्त देवताओं, शिवलिङ्गों के आविर्भाव तथा माहात्म्य का प्रतिपादन यहाँ विशेष रूप से किया गया है। काशी का प्राचीन भूगोल जानने के लिए यह खण्ड अत्यन्त आवश्यक है।

(५) **रेवा खण्ड**—इसमें नर्मदा की उत्पत्ति तथा उनके तट पर स्थित समस्त तीर्थों का विस्तृत वर्णन मिलता है। सत्यनारायण व्रत की सुप्रसिद्ध कथा इसी खण्ड की है।

(६) **अवन्ति खण्ड**—अवन्ति (उज्जैन) मे स्थित भिन्न-भिन्न शिवलिङ्गों को उत्पत्ति तथा माहात्म्य का वर्णन इस खण्ड में किया गया है। महाकालेश्वर का वर्णन बड़े ही विस्तृत रूप में दिया गया है। प्राचीन अवन्ती की धार्मिक स्थिति का पूरा दिग्दर्शन यहाँ मिलता है।

(७) **तापी खण्ड**—इसमें नर्मदा की सहायक नदी तापी के किनारे स्थित नाना तीर्थों का वर्णन मिलता है। नारदपुराण के मत से इसके षष्ठ खंड का नाम नागर खण्ड है। आजकल जो नागर खण्ड उपलब्ध होता है उसमें तीन परिच्छेद हैं—(१) विश्वकर्मा उपाख्यान, (२) विश्वकर्मा वंशाख्यान, (३) हाटकेश्वर माहात्म्य। इस तीसरे खण्ड में नागर ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन है। भारत की सामाजिक दशा जानने के लिए यह खण्ड अत्यन्त उपादेय है।

(७) **प्रभास खण्ड**—इसमें प्रभास क्षेत्र का बड़ा ही विस्तृत वर्णन है। द्वारका के आसपास का भूगोल जानने के लिए यह खण्ड अत्यन्त उपयोगी है।

महापुराणों में महाकाय स्कन्दपुराण का यह स्वल्पकाय वर्णन है। इस पुराण में जगन्नाथ जी के मन्दिर का वर्णन होने से कुछ पाश्चात्य विद्वानों का विचार है कि यह पुराण १३वीं शताब्दी में लिखा गया। क्योंकि १२६४ ई०

Scanned with CamScanner

के आसपास जगन्नाथ जी के मन्दिर का निर्माण हुआ था। परन्तु यह मत नितान्त भ्रान्त है क्योंकि ९३० शक (१००८ ई०) में लिखी गयी इसकी हस्त-लिखित प्रति कलकत्ते में उपलब्ध हुई है। परन्तु इससे भी प्राचीन ७वीं शताब्दी में लिखित इसकी हस्तलिखित प्रति नेपाल के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित है जिसका उल्लेख डा० हरप्रसाद शास्त्री ने वहाँ के सूचीपत्र में किया है। इससे सिद्ध होता है कि यह पुराण बहुत ही प्राचीन है। इसका मूल रूप क्या था और यह कैसे धीरे-धीरे इतना विशालकाय हो गया ? यह भी पुराण के पण्डितों के लिए अनुसन्धान का विषय है।

Scanned with CamScanner